

लोक प्रशासन के अर्थ, प्रकृति और क्षेत्र की विवेचना करें। Meaning, Nature and Scope of Public Administration

लोक प्रशासन राजनीति विज्ञान का एक ऐसा विधा है जो सरकार के कार्यों का कार्यान्वित करता है। लोक प्रशासन दो अर्थों में लिया जाता है। अर्थ - 1. वह कार्य या व्यवस्था जिसका अर्थ है 'व्यवस्था करना या व्यवस्थाओं की देखभाल करना' अथवा कार्यों की व्यवस्था करना। प्रशासन एक ऐसा व्यापक शब्द है जो सभी सार्वजनिक कार्यों के बारे में, चाहे वे सार्वजनिक हों या व्यक्तिगत, नागरिक हों या औद्योगिक, बड़े कार्य हों या छोटे सभी के सम्बन्ध में लागू होता है। ऐसे में लोक प्रशासन के दो अर्थ - व्यापक और संकुचित - व्यापक रूप से राज्य की राजनीतिक मामलों के प्रयोग उनके द्वारा की जाने वाली क्रियाओं को ही लोक प्रशासन की संज्ञा दी जाती है। इसमें विधायिका तथा कार्यपालिका द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों का समावेश होता है। दूसरे संकुचित अर्थ में - इसका प्रयोग केवल कार्यपालिका द्वारा किये जाने वाले कार्यों के लिए ही होता है।

लोक प्रशासन की समझने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत से परिभाषित किया है। डिफेनर एवं प्रेसम ने - "वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मानवीय तथा भौतिक साधनों के संगठन और संचालन" को प्रशासन की संज्ञा दी है। ("Administration is the organization and direction of human and material resources to achieve desired needs" Piffner and Pressman) एक एम. जी. एच. के अनुसार - "लोक प्रशासन में वे सभी कार्य शामिल हैं, जिनका उद्देश्य लोक नीति को द्वारा प्रदान किया जाता है।" दूसरे विद्वानों के अनुसार - "लोक प्रशासन विधि अथवा कानून की विस्तृत एवं समग्र रूप में कार्यान्वित करने का नाम है। कानून को कार्यान्वित करने की प्रक्रिया को प्रशासनिक क्रिया कहा जाता है। इस प्रकार लोक प्रशासन को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है जैसे - किलोबी, लुथर गुमिक, साइमन और वाल्डो इत्यादि।

Nature

लोक प्रशासन की प्रकृति की विवेचना सम्बन्धी दो दृष्टिकोण हैं एकीकृत (Integrated) तथा प्रवर्धनीय (Managerial)

उसमें कुछ विचारकों का मत है कि निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सम्पादित की जाने वाली क्रियाओं का समन्वित एवं योजनामय योग ही लोक प्रशासन हो चाहे वे पृथक् लेखन, प्रबन्ध या तकनीक ही क्यों न हों। जहाँ जहाँ जैसा कि उद्यम में कार्यरत व्यवस्थापक, फौरमैन, चौकीदार, सफाई कर्मचारी तथा आस के सचिवों तथा प्रबन्धकों के कार्यों को लोक प्रशासन ही संज्ञा देने से है। इस दृष्टिकोण को अपनाते हमें किता संज्ञान के में कार्यरत दोरे और कई व्याप्तियों तक कार्यों को लोक प्रशासन का भाग माना जाता है। इसी दृष्टि को एल. बी. व्हाइट ने अपनाया है। उनके अनुसार — लोक प्रशासन का सम्बन्ध “उन सभी कार्यों से है जिनका प्रयोजन आर्थिक नीति या उद्देश्य की पूरा करना या उसे क्रियान्वित करना होता है।”

इससे दृष्टिकोण में केवल उन्ही लोगों के कार्यों को प्रशासन माना है जो किता उद्यम सम्बन्धी प्रबन्धकीय कार्यों को पूरा करते हैं जिसमें सभी क्रिया-कलाप एक समन्वित प्रयास के समान दिखाने पड़ते हैं। इस दृष्टिकोण का समर्थक - साइमन, मिथबर्ग तथा भागसन हैं। एल्बुस लुथर लिखते हैं इस सम्बन्ध में लिखते हैं कि — “प्रशासन का सम्बन्ध कार्य पूरा करने के लिए निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति से है।”

“Administration has to do with getting things done, with the accomplishment of defined objectives” — (Luther, Luther)

लोक प्रशासन का क्षेत्र

The Scope of Public Administration

बदलते इस परिवेश में लोक प्रशासन जैसे जातिगत विषय का क्षेत्र निश्चित करना बहुत ही कठिन है।

लोक प्रशासन के क्षेत्र के संबंध में निम्नालिखित-या दृष्टिकोण प्रचलित हैं।

1. व्यापक दृष्टिकोण (Broad view) : — इस दृष्टिकोण में अनेक विद्वानों जैसे — एल. बी. व्हाइट, मावर्स, विलोबी, रिगो, साइमन आदि ने लोक प्रशासन के क्षेत्र के सम्बन्ध में व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। जिसमें सरकार के तनी अंगों — कार्यपालिका, व्यवस्थापिका तथा

आपाण्डि से सम्बन्धित है। इस दृष्टिकोण के अनुसार लोक प्रशासन के क्षेत्र में वे सभी क्रियाकलाप सम्मिलित हैं जिनका प्रयोजन लोक नीति से पूरा करने या क्रियान्वित करना होता है। प्रो व्हाइट के अनुसार — "लोक प्रशासन में वे सभी कार्य आते हैं जिनका उद्देश्य सार्वजनिक नीति को पूरा करना अथवा लागू करना होता है।" माफे के अनुसार — "अपने व्यापकतम क्षेत्र में लोक प्रशासन के अन्तर्गत सार्वजनिक नीति से सम्बन्धित सभी क्रियाएँ आती हैं।"

पान्डू अनेक और विद्वानों के अनुसार व्यापक अर्थ में लोक प्रशासन का अध्ययन अव्यावहारिक है किन्तु ऐसा करने से लोक प्रशासन को कुछ असर से जागृत है।

2. संकुचित दृष्टिकोण (Narrow View) :— इसमें अनेक विद्वानों जैसे — साइमन, लुथर गुलिक आदि ने भी लोक प्रशासन के क्षेत्र के सम्बन्ध में संकुचित दृष्टिकोण को अपनाया है। इनके अनुसार लोक प्रशासन का सम्बन्ध शासन की केवल कार्यपालिका भाग से है। साइमन के अनुसार — "लोक प्रशासन से अभिप्राय उन क्रियाओं से है जो केन्द्र, राज्य तथा (ग्रामीण) सरकारों की कार्यपालिका भागों द्वारा सम्पादित की जाती हैं।" लुथर गुलिक के अनुसार — "इसका विवेक सम्बन्ध कार्यपालिका से है।" संक्षेप में कह सकते हैं कि लोक प्रशासन में कार्यपालिका के संगठन, उसकी कार्य-प्रणाली एवं कार्य-पद्धति का अध्ययन किया जाना चाहिए।

3. पौडकोर्ब दृष्टिकोण (PODDCORB View) :— इस दृष्टिकोण से लोक प्रशासन के कार्य-क्षेत्र के सम्बन्ध में लुथर गुलिक ने जिस मत को प्रतिपादन किया है उसे 'पौडकोर्ब' कहा जाता है। लुथर गुलिक से पहले डविड, हेवरी, फेयोल, ड्यार्क ने भी 'पौडकोर्ब' दृष्टिकोण को अपनाया था किन्तु इन विचारों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का श्रेय गुलिक को ही जाता है। वे पौडकोर्ब अर्थ संग्रही के साथ शब्दों के प्रथम अक्षरों को मिलाकर बनाया गया है। जो संगठन के सभी क्रिया-कलापों में अपनाई जाती है। लोक प्रशासन के कार्य-क्षेत्र के सम्बन्ध में 'पौडकोर्ब' विचार को समान्य रूप से स्वीकार किया जाता है।

आदिभवादी
प. लोककल्याणकारी दृष्टिकोण (Ideological or Welfare view)

लोक प्रशासन के क्षेत्र से सम्बन्धित एक अन्य दृष्टिकोण लोककल्याणकारी दृष्टिकोण है इसे आदिभवादी दृष्टिकोण भी कहा जाता है इस दृष्टिकोण के मानने वाले राज्य और लोक प्रशासन में अत्यधिक अन्तर नहीं मानते। ~~उन्हें उद्देश्य~~ इस दृष्टिकोण के मानने वाले कहते हैं कि — "आज लोक प्रशासन सम्यक् जीवन की बहुत मात्र ही नहीं, वह सामाजिक न्याय तथा सामाजिक परिवर्तन का भी साधन है।" इससे स्पष्ट हो जाता है कि लोक प्रशासन का क्षेत्र जनता के हित में किये जाने वाले सभी कार्यों तक फैला हुआ है।

अन्तः निष्कर्ष के तौर पर यही कहा जा सकता है कि वर्तमान पारिवर्तन में लोक प्रशासन की क्रियाओं का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है और समाजवादी एवं जनकल्याणकारी विचारधारा की पुर्गाई के साथ-साथ वह दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है।